417
H 82 P

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1335/10/21

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 417

18

गरीबों के नाले।

की एक शाहियां कितनीही कितनेही तख़्त उलट डाले।

है हिला कुलाबें गईं अर्श की गरज़ गरीबों के नाले॥

लेखकः—

शीतलप्रसाद बिशनोई

891.431
B 542G

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No. 417
Date 9.12.51
GOVT. OF INDIA

ओ३म्

प्रार्थना

बानी नं० १

सुमिरो प्रथम जगदीश भव से पार हो नैया।
उनके सिवा इस किश्ती का को पार लगैया॥
सागर महा संसार है अरु लोभ रूपी जल।
कीचड़ विकट है मोह का इस बीच अति सबल॥
सुत तात नार यार हैं जल जीव ये सकल।
उठतीं तरंगे काम और क्रोध की प्रबल॥
है तरनी रूपी देह अरु है जीव चढ़ैया।
उनके सिवा इस किश्ती का को पार लगैया॥
डाला है दुराचार का यहां जाल मित्र कर।
तूफां प्रबल अन्याय का जारी है खूब तर॥
मन का भंवर बलवान है ले जाय खींच कर।
केवट है केवल बुद्धी का बल्ली है ज्ञानकर॥
हैं दुश्मन दस हों इन्द्रियां केवट की ऐ भैया।
उनके सिवा इस जीरन किश्ती का को पार लगैया॥

ब्रह्मचर्य आश्रम गृहस्थ अरु वान प्रस्थ सन्यास।
इस किश्ती के विश्राम की चारों हैं जगह खास॥
पाना परम पद की मंजिल है भारी दिल में आस।
निर्बल हो सभी तौर बल क्या आपके है पास॥
ऐसे विकट दुष्काल से है वो ही बचैया।
उनके सिवा इस किश्ती को पार लगैया॥
ध्रू द्रोपदी प्रहलाद के जब आ पड़ी थी सर।
करुना भरे स्वर से पुकारा शंकर जोर कर॥
दारुन बिपद जाकर दली जाहिर है खूब तर।
कालीचरन की बार हो अबमिहर की नज़र॥
है दीन दास दाया का अनुभूत चहैया।
उन बिन इस जीरन किश्ती का को पार लगैया॥

नान कोअपरेशन

बानी नं २ नॉनकोअपरेशन

कब तक मुसीबत पे मुसीबत हम सहा करें।
नान को अपरेशन के सिवा बतला ओ क्या करें॥
दरियाने जंगे यूरुप हमने खून बहाया।
बदले भलाई के फिर भी रौलेट बिल पाया॥
ग़मगी हो ग़म ज़दों ने दर्दे दिलगर सुनाया।
रजक से भजक बने गन बमों से उड़या॥
फिर भी ज़ालिम डायर से उफ़ बागी कहा करें।
नान को अपरेशन के सिवा बतलाओ क्या करें॥

तुर्कों से क्या कहा था कुछ उसकी भी है खबर
इमदाद दो रक्षा करें टर्की का वो जिकर॥
अफसोस अंग भंग कर ढाया जुलुम कहर।
इससे मुसलमानों का भी जलने लगा जिगर॥
हद है कहां तक जुल्मों से सब्र दिला करें।
नान को अपरेशन के सिवा बतलाओ क्या करें॥
आखिर हम भी इन्सान हैं हो कहां तक सबर।
फटता कलेजा आता जब पंजाब का जिकर॥
जिन देवियों की धर्म पर थी जान निछावर।
क्या क्या न हा उन सतियों पर ढाया जुलुम जबर॥
कब तक कलेजा थाम जुल्मों को सहा करें।
नान को अपरेशन के सिवा बतलाओ क्या करें॥
बस क्या था खूब जुल्मों से लाचार हो गये।
सतियों की दुर्गति से जलीलो ख्वार हो गये॥
इन्साफ जुल्म चालों से बेजार हो गये।
लाचार असहयोग को तैयार हो गये॥
सुनता न कोई किससे दर्द दिल कहा करें।
नान को आपरेशन के सिवा बतलाओ क्या करें॥
गरचे तुम्हें गनतेग अरु बमो का नाज है।
तो धर्म पर मरना हमारा भी रिवाज है।
मुतलक न डर जुल्मों का कुल मरने का साज है।
बाकी अभी कुछ तुम में ऋषियों की लाज है॥

रहते हम जैसे दसन दहन में रहा करें।
नान कोअपरेशन के सिवा बतलाओ क्या करें।
दुख भोग चुके खूब अब कुछ सुख छायेंगे।
दम जाये मगर कदम न पीछे हटायेंगे॥
तेगे कातिल का कुछ नही अब ख़ौफ खायेंगे।
आयें मशीनगनें हम सीना अड़ायेंगे॥
शंकर शीतल हिंसा को बस दिल से जुदा करें।
नान कोअपरेशन के सिवा बतलाओ क्या करें॥

बानी नं० ३ हड़ताल।

जी तोड़ करें श्रम अरु मरें भूख के मारे।
हड़ताल न करें करें क्या दीन बिचारे॥
फिरते हैं नङ्ग अंग साबित वस्त्र तक नहीं।
टूटी मड़ैयों में पड़े रहते हैं शक नहीं॥
अफसोस उनकी दीनता में कुछ फरक नहीं।
दुख उनका बटाने का कोई मुसतहक नहीं॥
तिस पर भी काफी तौर से होते न गुजारे।
हड़ताल न करें करें क्या दीन बिचारे॥
मरते हैं भूखों पाते अन्न पेट भर नहीं।
सहते हैं शीत घाम से करते उजर नहीं॥
तिस पर भी काफी तौर से होता गुजर नहीं।
अफसोस दीनों की कोई लेता खबर नहीं॥

हैं भिड़ रहे दरिद्र से खम ठोंक करारे।
हड़ताल नकरें करें क्या दीन बिचारे॥
है खर्च बीस का तलब दस बारा ही पायें।
फिर आप क्या खायें औ क्या बच्चों को खिलायें॥
तनख्वाह बढ़ाने का अगर जिक्र चलायें।
हंटर अरु घूंसे साहिबों की ठोकरें खायें॥

आरी हुये हैं स्वार्थ प्रिय अन्याय सेसारे।
हड़ताल न करें करे क्या दीन बिचारे॥
जिनके सबब से तुमको सदा मिल रहा आराम।
अफसोस है उन दुखियों पर जुल्मों सितम तमाम॥
अब भी जरा समझ लो औ करो ठीक इतन्जाम।
आहें ग़रीबों की वरना करकर देगी इख़तताम॥
शंकर तुम्हारे बिन इन्हें अब कौन उबारे।
हड़ताल न करें करें क्यादीन बिचारे॥

बानी नं०४ चर्खे की।

आपस में प्रेम का यही व्योहार कीजये।
चरखे चला निज देश का उद्धार की जिये॥
चरखे को अपना चक्र सुदर्शन बनाइये।
इसके ही बल भारत की दुर्दशा मिटाइये॥
इसकेही बल से देश में शुभ कीर्ति छाइये।
इसके ही बल लुटते हुये धन को बचाइये॥

अब वस्तु बिदेशी का बाहिष्कार कीजिये।
चरखे चला निज देश का उद्धार कीजिये॥

धन में बड़ा धन सबसे ये सरवस्व तुम्हारा।
बलमें बड़ा बल है यही जीवन का सहारा॥
निज इष्टमान कर इसी की शक्ति के द्वारा।
उन्नत ये देश का करो इक बार सितारा॥

काहिल पने का अब नहीं इज़हार कीजिये।
चर्खें चला निज देश का उद्धार कीजिये॥

जो धन बिदेशों को है बेतादाद जा रहा।
दीनों के श्रम का फल हुआ बरबाद जारहा॥
भीषण बिषमता का समय चहुं ओर छा रहा।
कारन यही है देश मुसीबत उठा रहा॥

हम दर्द बनिये देश का कुछ प्यार कीजिये।
चर्खें चला निज देश का उद्धार कीं जिये॥

पहिने बिदेशी बढ़ता वस्त्रौ ख्याल छोड़िये।
नाकिस गुलामी चीज़ों से सम्बन्ध तोड़िये॥
त्यागो विदेशी शाल से नाता न जोड़िये।
शोभा दे देशी तरुवरों की छाल ओढ़िये॥

बन दृढ़ त्यागी भारत की नैया पार कीजिये।
चरखे चला निज देश का उद्धार कीजिये॥

शंकर घर २ मेंचरखों का प्रचार हो जाये।
उजड़ा हुआ येहिन्द फिर गुलजार हो जाये॥

हम हिन्दियों का इससे सच्चा प्यार हो जाये।
गम गर्क बेड़ा भारत का बस पार हो जाये॥

यह अर्ज मदन-शीतल की स्वीकार कीजिये।
चरखे चला निज देशका उद्धार कीजिये॥

बानी नं० ५

अन्याय अत्याचारों की परवा न कीजिये।
बन असहयोगी शीघ्र ही स्वाराज्य लीजिये॥
मुद्दत से हाले ग़मका कर इजहार चुके हो।
हो दीन अति आधीनता से हार चुके हो॥
सोचो औ सच कहो किया क्या पार चुके हो।
नित मांगने से खो अपना सतकार चुके हो॥
अपना हक लेने में मुतलक मिन्नत न कीजिये।
बन असहयोगी शीघ्रही स्वराज्य लींजिये॥
जागो वहुत दिन सो चुके अब होश में आओ।
बन कर विभीषण देश की दुर्गति न कराओ॥
किन वीरों की सन्ताने हो कुछ चेत तो जाओ।
मर्याद मान शान का कुछ ख्याल तो लाओ॥
कहला गुलाम जीवन को जाया न कीजिये।
बन असहयोगी शीघ्रही स्वराज्य लीजिये॥
पाये बिना स्वराज्य सुख नहीं पाय सके हो
लुटता हुआ धन अपना नहिं बचायसके हो॥

मसला खिलाफत भी न तै कराय सके हो।
पंजाब ऐसे खून नहिं मिटाय सके हो॥

कुछ तो अभागी देश पर दाया ही कीजिये।
बन असहयोगी शीघ्रही स्वराज्य लीजिये॥
अपना हक़ लेने में नाहक भय खाय रहे हो।
गँवा कर जानो माल भी दुख पाय रहे हो॥
दुर्गति सतियों की नीचों से कराय रहे हो
भारत जननी का दूध क्यों लजाय रहे हो॥

लानत है तुमको पूर्वजों पर ध्यान दीजिये।
बन असहयोगी शीघ्रहीस्व राज्य लीजिये॥
गरये भी थोड़ा वक्त निकल कर हँसे जायगा
तो फिर जमाना नये नये रंग लायेगा॥
हर तौर दुख दिखायेगा दर दर फिरायेगा॥
आरत भारत के चश्मों से अश्के बहायेगा।

कुछ तो पुरुषों के गौरव की अब शर्म कीजियै।
बन असहयोगी शीघ्रही स्वराज्य लीजिये॥
शंकर को शाक्षी मान दृढ़ हो करके आइये।
लाजिम तुम्हें कांग्रेस की आज्ञा निभाइये॥
दम जाये मगर कदम मत पीछे हटाइये।
हरसू हो अमन चैन गर स्वराज्य पाइये॥

आरिज़ है अर्ज़ शीतल की स्वीकार कीजिये।
बन असहयोगी शीघ्रही स्वराज्य लीजियै॥

बानी नं० ६ किसानोंकी।

करुणा भरी दृष्टी इधर इकबर होजाये।
हम दीन किसानों का बेड़ा पार होजाय॥
अतिदीन हम किसान प्रान धनको करनिसार।
सहते हैं शीत घाम अरु करते हैं श्रम अपार॥
रहते है टूटी फूटी मड़ैयों में मन को मार।
दिन पूरे कर रहे हैं जिंदगी के बेशुमार॥

अभिमान स्वेच्छा चारी का संहार हो जाये॥
हम दीन किसानो का बेढ़ा पार हो जाये॥
जी तोड़ पहिले बिगड़ी भुमिको बनाते है।
बोते और सीचते भी बहुत दुख उठाते
मालिक जमी के फिर भी नहीं बाज आते हैं।
बेगार कराते हैं इजाफा लगाते हैं॥

खुदगर्जी बेईमान ये बेकार हो जाये।
हम दीन किसानों का बेड़ा पार हो जाये॥
करते हैं काट माड़ के जब नाज को तयार।
बेहद सताते लूट मचाते हैं जमीदार॥
थोड़े बचे हुये से कैसे साल करें पार।
मिलना है एक वक्त भी मुशकिल हमे अहार॥

अब भी असर आहों का गर सरकार हो जाये।
हम दीन किसानों का बेड़ा पार हो जाये॥

हम ग़म ज़दों के वास्ते कानून अति प्रवल।
जारी किये गये हैं नहीं बाल भर है बल॥
ग्यारह बरस के बाद किये जाते बेदख़ल।
बोलो रही किसानों की जीने की क्या शकल॥

दाया करो अबकी तो जीवन सार हो जाये।
हम दीन किसानों का बेड़ा पार हो जाये।

हे ईश क्षीर सिंधु में सोते हो क्या पड़े।
कैसे सहें होते अनर्थ आज कल बड़े॥
रक्षा करो स्वामी बनो इस तौर मत कड़े
इच्छा न हो तो लो उठा करते बिनय खड़े॥

शंकर गुरु निःस्वार्थ अगर प्यार हो जाये।
हम दीन किसानों का बेड़ा पार हो जाये॥

जैंटल मैनी शान

बिगड़ी हुई हा देश प्रणाली है आज कल।
क्या जैंटिल मैनी शान निराली है आज कल॥
क्या खूबही नकटाई लगाई है आज कल॥
कालर बिचारे की भी बन आई है आजकल॥
मफलर की धूम चौतरफ छाई है आज कल।
पेटी से चमड़े की भी तबाही है आज कल॥

कुल चाल पूर्वजों की मिटा ली है आज कल।
क्या जैंटिलमैंनी शान निराली है आज कल॥
अचकन पुरानी चाल की भाती न आज कल।
बिन कोट अंग्रेजी के चल आती न आज कल॥
गर्वें पुरानी चाल उठ जाती न आज कल।
इस वास्कट तक तो नौबत आती न आज कल॥
मूं में क्या अजब पान की लाली है आज कल।
क्या बूट सूट की फसल आई है आज कल॥
पालिस ने खूब धूम मचाई है आज कल।
क्या खूब कमर कस से तबाही है आज कल॥
सिडौन होने की भी मनाही है आज कल।
भाड़े की साइकिल भी मगाली है आज कल॥
क्या जैंटिलमैंनी शान निराली है आज कल।
सज धज के जबकि निकली सवारी है आजकल॥
सिगरेट बिचारी की तलबगारी है आज कल।
जैराम व प्रणाम बिसारी है आज कल॥
गुड मौर्डिंग्न गुडबाई उचारी है आज कल।
मस्तक पे मांग की भी उजाली है आज कल॥
क्या जैंटिल मैनी शान निराली है आज कल।
कुल राही रस्म अपनी बिसारी है आज कल॥
मय ख्वारी जिनाकारी अख्त्यारी है आज कल।
फैशन के भूत ने किया भारी है आज कल॥

यह है सबब जो हिन्द दुखारी है आज कल।
रंगत ये मदन ने नई ढाली है आज कल॥
क्या जैंटिल मैंनी शान निराली है आज कल॥

॥ रसिया ॥

ईस बोर्ड ने आफत ढाई। शर्मागई नौकर शाही॥
वही भिखारी लोग मागने बोट जो घरर आते है।
करें आपका कमासैकड़ो कसमें आन उठाते है॥
पाकर बोट मेम्बर बनगर कुछ ओहदा पा जाते है।
करे घोर अन्याय किसी कोखातिर में न लाते है॥
ऐसे ऐठे फिरैं मनो मिल गई जहां कीशाही।
शर्मागई नौकर शाही॥

पड़ा२ गलियोंमें कूड़ा सड़ा करे औ भिनकाये।
हैजा प्लेग बुखार आदि कितनी बीमारी उपजाये॥
क्या मज़ाल गोरी बस्ती में जरा भी कूड़ा रह जाये।
वहां रहे तो सारी शान अरु शेखी मिट्टी मिलजाये॥
कहें साफ तो बुरालगे लें नाक अरु भौंह चढ़ाई॥
शर्मा गई नौकर शाही॥

गाड़ा बैल सादियो में रोजाना खूब छिड़क जावे।
गर्मी में जलदान करन वो गोरी बस्ती को जावे॥

औरसुनोगर लगी आगकही घरआधा जबजल जावे।
धीरे धीरे तब बो लगड़ा इंजन कहीं पहुंचपावे॥
इनजैचन्दोने वस्ती में डाली गजब तबाही॥
शर्मागई नौकरशाही॥

वाटरहाउस टेक्स आदि ये हमपर रोजबढ़ाते है।
माल बाप का समझ मोटरे ले अरु ऐश उड़ाते है॥
करने गर फरियाद कोई इनके बगलों पर जोते हैं।
करते है आराम नही फुरसत है यह फरमाते है॥
क्यार बयां मैं करु जुल्म है नाकों मे दम आई।
शर्मा गई नौकरशाही॥

अन्तिम अर्ज आपसे हैयेइसको भूल न जाना तुम।
ऐसे नीच मनुष्यों को मत मेम्बर कभी बनाना तुम॥
मागन आये वोट खूबही खोटी खरी सुनाना तुम॥
करै आप काकाम उन्ही कोमेम्बर बना बिठानातुम॥
शीतल की शुभ सीख मान लो पाओगे सुख भाई।
शर्मागई नौकरशाही॥

॥ अन्योक्ति ॥

रे नीच दुर्योधन तेरा जब ध्यान होआता कभी।
बिकराल ज्वाला क्रोध से तन तप्त हो जाता तभी॥

अनुचित उचित वक्तव्यका नहि धर्मभ्राता ध्यान में
पाती विजय बुद्धी नहीं फिर क्रोध से मैदान में॥

* * *

क्या युधिष्ठर भ्रातभी नहिं राज्य हिस्से दार था॥
फिर स्वत्व उसका उसको दे देने में क्या इंकार था॥
शकुनी करणशल्यादि के अभिमान में फुला रहा।
शुभ नीत प्रेम प्रतीत को तू सर्वदा भूला रहा॥

* * *

अपमान दूतों काकिया मद अंध हो सोता रहा।
निज हाथ अपने नाश के तू बीज ही बोता रहा॥
माना न आखिर को समर का ठाठ ठठ हो तो गया।
यतू धर्म है ततु जय सदा सद वाक्य घटहीतो गया॥

* * *

अन्याय के संग्राम में परिणाम क्या अच्छा बदा।
कुरु बंश का कर अंत जगसे नाम मेटा सर्वदा॥
अच्छा हुआ कुर कुल बिरुप के नाश हेतु कुठार है।
रे रे अधम नर पातकी सौ बार छिः धिक्कार है॥

आदर्श प्रेस कानपुर में मुद्रित